प्रातः क्लास 31-10-68 ओमशान्ति पिताश्री शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप समझाते हैं इस रथ द्वारा। बाप ने समझाया है मनुष्य को कब भगवान नहीं कहा जा सकता। मनुष्य में देवीगुण और आसुरी गुण हो सकते हैं। इसलिये मनुष्य को कब भगवान नहीं कहा जा सकता। इन(ल0ना0) को भी भगवान-भगवती नहीं कहा जा सकता। कायदे के विरुद्ध है। मनुष्य को मनुष्य से देवता बना सकते हैं भगवान-भगवती नहीं। क्योंकि प्रवृति मार्ग है। तो अपने को भगवान कहने वा मनुष्य को भगवान कहने अथवा परमात्मा को सर्वव्यापी कहने से भारत की हालत देखो कैसी हो गई है। बाप आकर समझाते हैं एक ही भूल से भारत की कितनी दुर्गति हो जाती है। अभी सभी दुर्गति में हैं। यह भी कोई मनुष्य समझ नहीं सकते हैं। मनुष्य है ही पत्थर बुधि। गायन भी है पत्थर बुधि, पारस बुधि, आसुरी बुधि, ईश्वरीय बुधि। ईश्वर भी जरूर यहां आकर बुधि देंगे। वहां बैठे तो नहीं देंगे ना। यहां आकर बच्चों को सुनहरी बुधि देते हैं। सुनहरी बर्तन बनाते हैं। अभी तो लोहे का बर्तन है। कितना रात-दिन का फर्क है। तुम बच्चे जानते हो हम स्वर्ग के मालिक थे। उस समय और कोई भी नहीं था। अभी तो तुम स्वर्ग के मालिक नहीं हो ना। थे जरूर। फिर 84 जन्म लेते2 नीचे उतरते हो। 84 से ऊपर तो कोई जा नहीं सकते। 84 जन्म लेते नीचे ही उतरते हैं। सतो से रजो तमो में गिरना होता है। मनुष्य सृष्टि भी पहले नई फिर पुरानी जरूर होती है। पुराने को कहा जाता है कलियुग। अभी तुम जानते हो आत्मायें पहले स्वर्गवासी थी। फिर अभी नर्कवासी बनी है। यह बाप ही बच्चों से पूछते हैं तुम स्वर्गवासी हो या नर्कवासी हो? बाप के सिवाय तो और कोई पूछ न सके। क्योंकि सभी हैं नर्कवासी। वेश्यालय में रहने वाले तो पूछ कैसे सकते हैं। पूछने वाला तो फिर इनके विपरीत हो। शिवालय कहा ही जाता है सतयुग को। क्योंकि शिव बाबा ने स्वर्ग स्थापना की थी। वे ही नई सृष्टि रचते हैं। परन्तु मनुष्य भगवान को ही नहीं जानते। रचयिता बाप की ही कितनी ग्लानी की है। बाप कहते हैं मैं कभी ठिक्कर भित्तर में नहीं आता हूं। मैं तो एक ही बार आता हूं जब कि नई सृष्टि की स्थापना और पुरानी सृष्टि का विनाश कराना होता है। नई सृष्टि थी जो कि अब पुरानी बनी है। कितनी सहज बात है। जैसे कि एक कहानी है। इनका नाम ही है सहजराजयोग। पढ़ाई भी सहज है। याद भी सहज है। मनुष्य बैरिस्टरी पढ़ते हैं तो वह पढ़ाई भी याद रहती और पढ़ाने वाले टीचर भी याद रहते हैं। उनसे योग भी लगाते हैं। तुम कहेंगे शिवबाबा हमारा टीचर बनकर हमको मनुष्य से देवता बनाते हैं। हमारी आत्मा अपवित्र भ्रष्टाचारी थी उनको पवित्र श्रेष्ठाचारी बाप ही बनाते हैं। भ्रष्टाचारी अक्षर सतयुग में होता ही नहीं। यहां है भ्रष्टाचारी। वह भी कब से पतित बनना शुरू हुआ है जब से रावण ने प्रवेश किया है। अभी बाप कहते हैं अपने को आत्मा समझ मुझ बाप को याद करो तो तुम पतित से पावन बन जावेंगे। तुम मेरे बच्चे थे। सतयुग में तुम कितने सुखी थे। कितनी तन्दुरुस्ती थी। अभी तो अपवित्र बनने से कितने दुःखी बने हो। अभी बाप कहते हैं बिल्कुल खबरदार रहो। कहते हैं ना "भज रे सरण बाज कान टोप जावेंगा। यह भी अभी का दृष्टान्त है। थोड़ा भी देहअभिमान में आया तो माया एकदम कान टोप लेगी। इसलिये कोशिश कर देहीअभिमानी बनना है। ऐसे भी नहीं सभी 100% पास होंगे। नहीं। नम्बरवार तो होते ही हैं। तुम जानते हो दुनिया में किसी के भी बुधि में नहीं है। भगवान बाबा है। बुलाते भी हैं मीठे बाबाआओ। बाबा अक्षर में ही बहुत लव है। बाबा से ही वरसा मिलता है। दादा, चाचा, साले बहनोई से वरसा मिलता है क्या। एक बाप ही है जिससे वरसा मिलता है। सभी को बाप समझाते हैं इस समय तुमको तीन बाप है। बड़े बाबा से बेहद का वरसा मिलता है। छोटे बाप से हद का वरसा। तीसरे बाबा(प्र0 पिता ब्रह्मा) से कुछ भी नहीं मिलता। ~~छोटे बाप से हद का वरसा।~~ फिर तुम इनका फोटो भी क्यों लेते हो। अभी तो तुमको बेहद का बाप मिला है सिर्फ वह इस द्वारा देते हैं। कहते हैं मैं तुम्हारे मिसल शरीर नहीं लेता हूं। मैं पावन बनाये सभी को अशरीरी बनाता हूं। अशरीरी भव। शरीर से डिटेच होना गोया मरना सीखना। यह तो बहुत खुशी से अशरीरी होना है। क्योंकि नर्क से स्वर्ग में जाते हो। तो अन्दर में खुशी होनी चाहिए ना। खुशी

से शरीर को छोड़ देते हैं। सन्यासी आदि जो दृष्टान्त देते हैं सर्प का, भरमरी का, कछूरे का वह सभी इस समय तुम्हारे से लगता है। तुम अज्ञानी कीड़े कोज्ञान की भूं2 करते हो। वह सभी भक्ति की भूं2 करते हैं। भक्ति है अथाह। ज्ञान की भूं2 तो एक ही है। एक ही बात की भूं2 चलती है। भक्तिमार्ग में तो कितने यज्ञ तप दान पुण्य आदि करते हैं। कितना भटकते हैं। तुम कितने रायल हो। सिर्फ एक बात कहते हो कि बाप को याद करो। बाप को तुमने ही निमंत्रण दे बुलाया है हे पतित-पावन ·· वह लोग कितना ठाट-बाट से रहते हैं। भक्ति में यज्ञ तप दान-पुण्य आदि करते तुमने कितना खर्चा किया है। इसमें तो कोई खर्चा नहीं। तुमने देखो किसको बुलाया है। जो सर्व की सदगति करने वाला है फिर उनकी क्या सजावट आदि की है। कुछ भी नहीं। तुमको तो पता भी नहीं पड़ा कि बाप आया किस समय। तुम अपने जन्म दिन पर कितना शादनामा आदि मनाते हो। बात मत पूछो। खुशी में आ जाते हैं भगवान ने बच्चा दी। किसकी कृपा से? गुरु की कृपा से। अच्छा वह फिर बिमार हो पड़ता, मर जाता है तो फिर क्या कहते हैं, गुरु को तो बहुत गालियां देते हैं। अरे तुम उनको क्यों गाली देते हो। गुरु की कृपा से भगवान ने दिया तो उनसे लड़ो ना। तुम गुरु से क्यों लड़ते हो। यह सभी है भक्ति मार्ग की बातें। यहां तो तुमको बच्चे आदि कुछ भी चाहिए नहीं। जानते हो यहां के बच्चे तो बिच्छू टिण्डन नाग बलाएं हैं। बिचारी हैरान हो जाती है कहां कोई बच्चों को सम्भाले तो हम बन्धन से मुक्त हो सर्विस में लग जावेंगे। बाप कहते हैं बच्चे का बन्धन है तो कोई को दे दो। भगवान से बड़ी मेहनत कर बच्चा लेते हैं तो रग टूटती नहीं। यहां भी कोई समय ख्यालात आ जाता है। हमको बच्चा नहीं है। बच्चे के लिये हैरान होते रहते हैं। भल कहते हैं बाबा आप ही हमारे बच्चे हो। फिर भी बच्चे ही चाह रहती हैं। अरे यह बच्चा तो तुमको विश्व का मालिक बनाते हैं। बच्चा हो तो ऐसा। जो भी ब्राहमण बनते हैं सभी विश्व के मालिक बनते हैं। फिर उन में है नम्बरवार पद। जैसे कहते हैं भारत हमारा सबसे अच्छा देश है कबफिर देखो भारत की हालनी करते हैं। इस पर एक गीत है। अभी तुम समझते हो हम भारत के मालिक थे। स्वर्गवासी थे। अभी नर्कवासी हैं। कितनी बड़ी हिंसा करते हैं। जैसे कुत्ते का मिसाल देते हैं वह अपना ही खून बैठ चूसते हैं। इसमें बड़ा मज़ा आता है। यह भी एक दो का खून चूसते हैं। काम कटारी चलाये एक दो का खून करने में बड़े खुश होते हैं। एक दो को कितनी गालियां देते हैं। उल्लू के बच्चे गद्दहे के बच्चे। एक मैजिस्ट्रेट ने कहा तुम तो गदहा हो तो उसने बोला हम गद्दहा तो तुम भी गदहा। हम मनुष्य तो तुम भी मनुष्य। वह कुछ कह न सकें। जो उसने कहा सो उसने रिपीट किया। कितनी गालियां देते हैं। इनको कहा ही जाता है रौरव नर्क। तो बाप बैठ समझाते हैं यह भक्ति नहीं है। यह ज्ञान एक ही बाप देने वाला है। ज्ञान से ही सदगति होती हैं। कोई मनुष्य को यह पता नहीं है। विद्वान आचार्य शंकराचार्य आदि उनके बाप दादा कोई भी नहीं जानते। उनका तो बाप दादा है ना। शिव बाबा का तो कोई बाप दादा नहीं है। वही बैठ समझाते हैं। कृष्ण तो होता ही है सतयुग में। कृष्णभगवानुवाच कहना तो नम्बरवन मूर्खता है। कितने बड़े2 नामसे गीताएं हैं। टैगोर गीता। गंगेश्वर गीता। परन्तु गीता को जानते ही नहीं। बाप कहते हैं कृष्ण भगवान है नहीं। कृष्ण ने तो पूरे 84 जन्म लिये। भगवान फिर जन्म-मरण में आता है क्या। निराकार भग0 तो एक ही हैं। उनका नाम है शिव। बाकी यह ल0ना0 आदि देवताएं हैं। ब्रहमादेवतायनमः···· फिर कहेंगे शिव परमात्मायनमः। ऐसा कहते जानते हुये भी फिर भी गालियां देते रहते। बाप कहते हैं यह कोई नई बातनहीं है। ड्रामा बना हुआ है। भक्ति में जो कुछ होता आया है वह फिर भी होगा। यह बना बनाया खेल है। बनी बनाई बन रही ··· अनहोनी तो कोई है नहीं। ड्रामा में जो नूंध है सो जरूर होगा। यह चक्र फिरता रहता है। यह है तमोप्रधान आयरनएजेड दुनिया। भल मनुष्य समझते हैं 40हजार वर्ष पड़े हैं। गीता आदिशास्त्रों से तो यह बातें निकाली हैं। कलियुग अजन छोटा बच्चा है। गीता की कितनी कापी करते हैं। बाहर में जाते हैं प्रचार करने। गीता है पहला2 धर्मशास्त्र। गीता जरूर सभी तरफ होगी। समझते हैं पहले भारत खण्ड ही था। उनका ही यह धर्मशास्त्र है। तो जरूर कोई ने बनाया होगा। तो उसमें कृष्ण का नाम ठोक दिया है। अभी गीता तो है मनुष्यों की बनाई हुई। भक्ति मार्ग को। बाप ने समझाया है भक्ति मार्ग में गुरु तो सभी करते हैं परन्तु उनको गुरु नहीं कहा जाता।

31-10-68

सदगति करने वाला सच्चा गुरु एक ही है। सदगति अर्थात पावन बनना। वह तो एक ही पतित-पावन बाप है। हरेक बात अच्छी रीत समझना चाहिए। आत्मा ही समझती है। आत्मा ही पढ़ती है। आत्मा और जीव है। दोनो मेंवड़ा कौन है? सब कहेंगे आत्मा अविनाशी हैवह कब मरती नहीं। शरीर से आत्मा निकल जाती हैतो बस। शरीर को टूकड़ा2 करदो। आत्मा तो अविनाशी है ना। तो अपन कोआत्मा समझना चाहिए या शरीर? बाप बैठ समझाते हैं बच्चे तुम आत्माएं पतित बन गये हो। अभी पावन बनने लियेमुझ बाप को याद करो। यह बात फिर तुम कोई से कब नहीं सुनेंगे। इस समय ही तुमको ट्रान्सफर होना है। आत्मा जो पतित है वह पावन बननी है। पावन बन पावन दुनिया में जाना है। बाप कहते हैं मेरी दाढ़ी की लज्जा रखो। कोई बुरा काम मत करो। तो ब्रह्मा को भी दाढ़ी दे देते हैं। विष्णु और शंकर को नहीं दिखाते। देवताओं को तो दाढ़ी आदि होते ही नहीं। इसमें भी मेहनत करनी पड़ती है ना। वहां मेहनत की बात नहीं। इस मेहनत से भी बाबा छूड़ा देते हैं। इन ल०ना० को देखो कैसी फर्स्ट क्लास सिक्ल है। सो भी आधा कल्प के लिये तुम छूट जाते हो। वन्डर ऑफ वर्ल्ड है स्वर्ग। खुदा का बगीचा। अभी तो है रावण का जंगल। यह तो जानते हो बरोबर विष से जन्म लेते हैं, भ्रष्टा० हैं। यह भी तुम जानो और क्या जानो। भगवानुवाच बच्चे यह जो सन्यासी आदि अपन को ईश्वर कहलाते हैं यह हैं सबसे बड़ी असुर। एक एम०पी० ने भी कहा था कि यहराम रावण राज्य है। परन्तु अपन को रावण थोड़ेही समझते हैं। राज्य ही रावण का है तो खुद फिर रामराज्य में है क्या। परन्तु बिल्कुल ही पत्थर बुधि बन गये हैं। कितनी अपनी ग्लानी करते हैं। तो बाप बैठ बच्चों को समझाते हैं। यह कोई साधु महात्मा नहीं। यह तो बाप इस रथ में आते हैं परमधाम से। बाप कहते हैं मुझे आना ही पड़ता है। तुम बच्चे जानते हो हम आत्माएंशिव बाबा के बच्चे हैं। फिर प्रजापिता ब्रह्मा के एडाप्टेडबच्चे भाई बहनहो जाते हैं। सभी कहते हैं आदम बीबी। आदिदेव आदिदेवी। जगत अम्बा है तो जरूर जगत पिता है। बाप को तो सदैव बाबा ही कहा जाता है। प्रजापिताब्रह्मा और सरस्वती गाई जाती हैं। जिसको अम्बा कहते हैं। उन पर बल भी चढ़ते हैं। तो यह अभी की बात है। शिव पर बल चढ़ते हैं। ब्रह्मा पर बल चढ़ना कब नहीं देखेंगे। लक्ष्मी को भी माता कहते हैं। वह है विश्व की महारानी। इस समय तुम ममा बाबा कहते हो। बाबाने समझाया हैइन द्वारा तुमको एडाप्ट करता हूं तो यह वाईफ हो गई ना। तुम्हारी बड़ी अम्बा उनकी यह निशानी। और फिर सबसे बड़ी नदीब्रह्मपुत्रा फिर है सरस्वती गंगा। एक ही इस नदी का मेल सागरसे होता है। जिसको संगम कहते हैं। बाप इसमें प्रवेश करते हैं। इनको कहा जाता हैआत्माएं और परमात्मा अलग रहे बहु काल ... यहां आकर सभीउस एक बाप को याद करते हैंआत्मा के दो बाप तो हैंना। वह है सच्चा फादर। यह झूठा। कितने बाप तुमने लिये हैं? (84) फीचर्स तो सभी जन्म में बदलते जाते हैं। फिर वही फीचर्स 84जन्मों के बाद लेंगे। आत्मा में अनादि अविनाशी पार्ट भरा हुआ है। जो आत्मा को ही बजाना है। जिस शरीर से जो पार्ट बजाया वही शरीर से वही पार्ट फिर बजावेंगे। बाप कहते हैं यह बना बनाया ड्रामा है। इसमें जरा भी फर्क नहीं। हरेक जन्म की स्टेट अलग2 है। यह अनेक बार रिपीटहुई है। होती रहती है। कितना गुह्य ज्ञान है। कितनी इसमें समझ चाहिए। भक्तिमार्ग में कितनी मेहनत करते हैं। हठयोग आदि सिखलाते हैं। बाप आकरतुमको 21 जन्मों लियेसभी तकलीफों से दूर कर देते हैं। तो ऐसे बाप को कितनी खुशी से याद करना चाहिए। यहां है माया के सात वन्डर्स। तुम समझते होस्वर्ग कितना बड़ा वन्डर है। होकर गया हैतब तो सभी को याद पड़ता है। कोई मरता है तो कहते हैंफ्लाना स्वर्गवासी हुआ। तो जरूरनर्कवासी था। तुम भी नर्कवासी हो। फिर जब मरेंगे तब स्वर्ग में जावेंगे। तुम बहुत अच्छी रीत समझा सकते हो। आप आओ तो हम आपको बतावें तुम सच्च2 स्वर्गवासी कैसे बन सकते हो। स्वर्गवासी थे इतने वर्ष हुये, अभी नर्कवासी हो फिर स्वर्ग में जा सकते हो। ऐसे2 तुम ही कह सकते हो। यह थोड़ेही कहते कि मैं भगवान हूं। बाप भी कहते हैं यह तो पतित है। इसने पूरे 84 जन्म लियेहैं। तत त्वम। नम्बरवार राजधानी होगी। वह अब स्थापन होरही है। अच्छा मीठे2 सिकीलधरे रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडमार्निंग और नमस्ते।